दलहन प्रसंस्करण केन्द्रों से आय संवर्धन

उमा साह, हेमंत कुमार, मनमोहन देव, विकास मौर्या और **विक्रांत सिंह**

"दालें भारतीय आहार के साथ-साथ देश के लाखों लघु एवं सीमांत कृषकों की आजीविका का प्रमुख आधार हैं। किंतु दालों की मूल्य श्रृंखला लंबी, जटिल एवं बहुस्तरीय होने के कारण कृषकों को उनकी उपज का अपेक्षाकृत कम मूल्य प्राप्त होता है, जबकि उपभोक्ताओं को दालें अधिक कीमत पर खरीदनी पड़ती हैं। भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा संचालित 'फार्मर फर्स्ट' तथा 'आदर्श दलहन ग्राम' परियोजनाओं के अंतर्गत दलहन प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना कर कृषक समितियों को प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किए गए हैं। इन पहलों के माध्यम से कृषकों को मूल्य संवर्धन द्वारा अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है। इसके साथ ही स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण सुविधाओं की उपलब्धता से कटाई उपरांत होने वाली हानि में भी उल्लेखनीय कमी आई है। परियोजना ग्रामों में स्थापित मिनी दाल मिलों के माध्यम से कृषकों ने लगभग 35,000 से 50,000 रुपये तक की अतिरिक्त आय अर्जित की है। यह मॉडल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने, युवाओं एवं महिलाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध करवाने तथा किसानों की आय में वृद्धि करने की दिशा में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो रहा है।"

दालें हमारे दैनिक आहार का आवश्यक हिस्सा होने के साथ-साथ देश के लाखों कृषकों, विशेषकर लघु एवं सीमांत किसानों की आजीविका का महत्वपूर्ण आधार हैं।

भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

खेत से उपभोक्ता की थाली तक पहुंचने की प्रक्रिया में दालें अनेक चरणों जैसे-बिचौलियों, बाजारों, प्रसंस्करण इकाइयों, थोक एवं खुदरा व्यापारियों से होकर गुजरती हैं। इस प्रकार दलहनी फसलों की मूल्य श्रृंखला लंबी, जटिल एवं बहुस्तरीय होती है, जिसमें विभिन्न हितधारकों की भागीदारी रहती है।

प्रत्येक स्तर पर लागत एवं लाभ जुड़ने के कारण दालों की अंतिम कीमत में वृद्धि हो जाती है। परिणामस्वरूप, जहां उपभोक्ताओं को दालें महंगी मिलती हैं, वहीं कृषकों को अपनी उपज का अपेक्षाकृत कम मूल्य प्राप्त

कृषक समितियों का गठन एवं प्रशिक्षण

भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा संचालित 'आदर्श दलहन ग्राम' परियोजना के अंतर्गत कानपुर देहात जनपद के कांधी एवं कांधी की मड़ैया ग्रामों में दलहन प्रसंस्करण के माध्यम से मूल्य श्रृंखला के सुदृढ़ीकरण हेतु संगठित प्रयास किए गए। इस दिशा में वर्ष 2025 में 15 कृषकों को संगठित कर दो पंजीकृत कृषक समितियों–दलहन कृषक उत्पादक समिति, कांधी तथा सत्यनाम कृषक समिति, कांधी की मड़ैया का गठन सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के अंतर्गत किया गया। कृषक समितियों के सदस्यों की क्षमता निर्माण के उद्देश्य से पांच दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें दलहन प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन तथा आई.आई. पी.आर. मिनी दाल मिल के संचालन एवं रखरखाव से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान कृषकों ने अरहर दाल, मूंग दाल एवं बेसन जैसे उत्पादों का प्रसंस्करण कर उनकी पैकेजिंग की तथा संस्थान के कृषि व्यवसाय एवं उद्यमिता विकास केंद्र पर उनका विक्रय भी किया। इस समग्र प्रशिक्षण एवं अनुभव से कृषकों में दलहन प्रसंस्करण आधारित उद्यम स्थापित करने के प्रति रुचि एवं आत्मविश्वास विकसित हुआ, जिससे वे भविष्य में मूल्य संवर्धन के माध्यम से अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्रभावी मिनी दाल मिल

होता है और उन्हें उपभोक्ता द्वारा चुकाई गई कुल कीमत का लगभग 50–60 प्रतिशत ही मिल पाता है।

देश में दलहनी फसलों की खेती मुख्यत: छोटे एवं सीमांत कृषकों द्वारा की जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में भंडारण एवं प्रसंस्करण की पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में अधिकांश कृषक कटाई के तुरंत बाद अपनी उपज बेचने के लिए विवश होते हैं। वे प्राय: स्थानीय व्यापारियों या बिचौलियों के माध्यम से उत्पाद को मंडियों तक पहुंचाते हैं। इसके बाद दालों को थोक व्यापारी एवं कमीशन एजेंट खरीदकर प्रसंस्करण इकाइयों या दाल मिलों तक भेजते हैं, जहां सफाई, छिलाई, टूटाई (स्प्लिटिंग), पॉलिशिंग एवं पैकेजिंग जैसे कार्य किए जाते हैं। प्रसंस्करण के उपरांत दालें पुन: थोक एवं खुदरा बाजारों के माध्यम से बढ़ी हुई कीमतों पर उपभोक्ताओं तक पहुंचती हैं।

कृषकों की आय में वृद्धि तथा मूल्य श्रृंखला में उनकी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि वे केवल उत्पादन तक सीमित न रहकर एकत्रीकरण, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से जुड़ी गतिविधियों जैसे–छिलका उतारना, टूटाई, पॉलिशिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग एवं विपणन में भी सक्रिय भागीदारी करें। इसके लिए प्रमुख दलहन उत्पादन क्षेत्रों में स्थान विशिष्ट लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना एक प्रभावी रणनीति सिद्ध हो सकती है।

इसी दिशा में भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा संचालित 'आदर्श दलहन ग्राम' परियोजना के अंतर्गत कानपुर देहात जनपद के चार ग्राम–कांधी, कांधी की मड़ैया, इंगवारा एवं कोरवा में वर्ष 2022–23 से कार्य किया जा रहा है। इन ग्रामों के अधिकांश कृषक लघु एवं सीमांत श्रेणी के हैं, जो पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर निर्भर थे और आधुनिक तकनीकों का सीमित उपयोग करते थे, जिससे उनकी उत्पादकता एवं आय दोनों ही सीमित थीं।

पूर्व में ये कृषक अपनी दलहनी उपज को सीधे मंडी या बिचौलियों को बेच देते थे। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए संस्थान द्वारा परियोजना ग्रामों में दलहन प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना करवाई गई, ताकि मूल्य श्रृंखला को सुदृढ़ किया जा सके और किसानों की आय में वृद्धि हो सके।

प्रशिक्षण से कुशलता

ग्रामीण दलहन प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना

'आदर्श दलहन ग्राम' परियोजना के अंतर्गत तथागत दलहन कृषक उत्पादक समिति, कांधी तथा सत्यनाम कृषक समिति, कांधी की मड़ैया (जनपद-कानपुर देहात) को दलहन प्रसंस्करण केंद्र स्थापित करने हेतु आई.आई.पी.आर. मिनी दाल मिल के साथ-साथ प्रसंस्करित उत्पादों के सुरक्षित भंडारण के लिए आवश्यक भंडारण पात्र उपलब्ध करवाए गए। आई.आई.पी.आर. मिनी दाल मिल एक लघु स्तर की इकाई है, जिसे भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा कुटीर एवं ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने तथा दलहन प्रसंस्करण में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। यह मिल 2.0 एच.पी. के सिंगल-फेज मोटर से संचालित होती है तथा इसकी प्रसंस्करण क्षमता विभिन्न दालों के लिए लगभग 75-125 कि.ग्रा. प्रति घंटा है।

दाल मिल उपलब्ध करवाने के साथ-साथ दोनों समितियों को व्यवसाय स्थापना हेतु आवश्यक पंजीकरण एवं लाइसेंस जैसे-जी.एस.टी. प्रमाणपत्र, उद्यम पंजीकरण तथा खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण लाइसेंस प्राप्त करने में भी सहयोग प्रदान किया गया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप तथागत दलहन कृषक उत्पादक समिति, कांधी ने दलहन प्रसंस्करण क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है।

स्थापित ग्रामीण प्रसंस्करण केंद्र न केवल स्थानीय स्तर पर दाल प्रसंस्करण की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं, बल्कि परिवहन एवं भंडारण लागत में कमी लाने के साथ-साथ कटाई उपरांत होने वाले नुकसान को भी घटाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। वर्तमान में ये केंद्र सक्रिय रूप से कार्यरत हैं और परियोजना ग्रामों के अतिरिक्त आसपास के क्षेत्रों के कृषकों को भी सुलभ दरों पर प्रसंस्करण सुविधा प्रदान कर रहे हैं। इसके साथ ही उपभोक्ताओं को अपेक्षाकृत कम कीमत पर दालें उपलब्ध हो रही हैं।

ग्रामीण उद्यमिता का नया साधन

पिछले छह महीनों में इन केंद्रों द्वारा अरहर, उड़द, चना, मटर एवं मूंग की लगभग 1416 कि.ग्रा. दाल के विक्रय से 21,379 रुपये की आय अर्जित की गई। इसके अतिरिक्त अन्य कृषकों से 1328 कि.ग्रा. दाल के प्रसंस्करण पर 13,963 रुपये की आय प्रसंस्करण शुल्क के रूप में प्राप्त हुई। समिति के सदस्य दाल प्रसंस्करण से पूर्व सफाई एवं सुखाने जैसी गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भागीदारी निभा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में दलहन प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के ये सफल प्रयास किसानों तथा महिला कृषकों को प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन की दिशा में प्रेरित करने वाली एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल सिद्ध हुए हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से कृषकों को दलहन मूल्य श्रृंखला से सीधे जोड़ना संभव हुआ है, जिससे उनकी आय में वृद्धि के साथ-साथ बाजार में उनकी भागीदारी भी सुदृढ़ हुई है।

इसके अतिरिक्त, इस प्रकार के सफल मॉडलों को अन्य दलहन उत्पादक क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से अपनाया जा सकता है। इससे न केवल ग्रामीण युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे, बल्कि महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा मिलेगा। समग्र रूप से, ऐसे प्रयास ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने तथा कृषकों की आय में स्थायी एवं लाभकारी वृद्धि सुनिश्चित करने की दिशा में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।

फार्मर फर्स्ट परियोजना की प्रभावी भूमिका

भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा संचालित 'फार्मर फर्स्ट' परियोजना के अंतर्गत फतेहपुर जनपद में 15 महिला कृषकों को संगठित कर 'नमामि गंगे महिला कृषक उद्योग समिति, खदरा' का गठन वर्ष 2020 में किया गया। इस समिति का उद्देश्य दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन के माध्यम से सदस्यों की आय में वृद्धि के साथ-साथ पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना रहा है। समिति की महिला सदस्यों को दलहन प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा व्यवसाय संचालन हेतु आवश्यक प्रमाणन एवं लाइसेंस प्राप्त करने में सहयोग दिया गया। समिति द्वारा निर्मित उत्पादों को संस्थान के कृषि व्यवसाय एवं उद्यमिता विकास केंद्र के 'दलहन हाट' विक्रय काउंटर तथा विभिन्न किसान मेलों में प्रदर्शित एवं विक्रय किया गया, जिन्हें उपभोक्ताओं द्वारा सराहा गया। फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत इस समिति को भी आई.आई.पी.आर. मिनी दाल मिल प्रदान की गई। महिला कृषकों ने इसका सफलतापूर्वक उपयोग करते हुए दलहन प्रसंस्करण आधारित उद्यम स्थापित किया और गेहूं (बायोफोर्टीफाइड प्रजाति डीबीडब्ल्यू 187) का आटा, बेसन, चना दाल, दाल बड़ी एवं मूंग दाल जैसे उत्पादों का उत्पादन एवं विक्रय किया। वर्ष 2024-25 तक लगभग 547.5 कि.ग्रा. प्रसंस्करित एवं मूल्यवर्धित उत्पादों के माध्यम से समिति ने करीब 50,000 रुपये की आय अर्जित की। इस प्रकार स्थापित ग्रामीण दलहन प्रसंस्करण केंद्र धीरे-धीरे क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुविधा के रूप में अपनी पहचान बना रहे हैं। भविष्य में इन केंद्रों के माध्यम से प्रसंस्करित उत्पादों की मात्रा एवं आय दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि की व्यापक संभावनाएं हैं।